जैन साहित्य अकादमी ट्रस्ट, मुंबई

व्याख्यानमाला - २०२२/२३

जैन धर्म के वैज्ञानिक सत्य/तथ्य और व्यवहारिक जीवन में उनका अनुसरण

लेक्चर- ६ जैन खगोल और विज्ञान में विसंगतियों का निराकरण

व्याख्याता- डो. श्री नरेन्द्र भंडारी

दिनांक - २०/०१/२०२३

विज्ञान यह कहता है जब लोक में करके तीन प्रकार के पदार्थ हैं| एक जो हमको दिखाई देते हैं ह्मंस मेटर, एक जो हमको दिखाई नहीं देते हैं डार्क मैटर, और एक जो बिल्कुल ही अदृश्य है वह है डार्क एनर्जी | जिससे कि यूनिवर्स का एक्सपेंशन हो रहा है|| साइंस बिलीव इन एक्सप्लेन यूनिवर्स एक्सपेंडिंग यूनिवर्स|| तो यह एक प्रकार का रिपेयरिंग फ़ोर्स है जो रिपेलिंग फ़ोर्स करता है| और विज्ञान यह भी कहता है हमको जो दिखाई देता है वह ब्रह्मांड बहुत छोटा है || ऐसी मान्यता है कि थर्टीन पॉइंट एक billion years ago ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई थी। यह लाइट जो हमारे पास आ रही है उतना ही ब्रह्मांड हम देख सकते हैं उसके आगे बहुत बड़ा ब्रह्मांड है जिसको हम नहीं देख सकते।

हम बात करेंगे जैन खगोल और विज्ञान विसंगतियों का निराकरण कैसे किया जाता है||। there are more things to meet the eyes,three types of matter limited part of Universe can be seen. तीन प्रकार के पदार्थ हैं और जैन दर्शन भी कहता है 3 पुद्गल है दो स्पर्शीय, 4 स्पर्शीय और 8 स्पर्शीय| तो इसमें मेल खाता है बेसिक फंडामेंटल इस धारणा में, पर जब हम लोक की बात करते हैं तो विज्ञान कुछ और बात करता है और जैन दर्शन अलग बात करता है। तो यह विसंगतियां क्यों है तो यह विसंगतियों के बारे में आज हम बात करेंगे||

बहुत सारी विसंगतियां हैं लेकिन दो चीज यह है कि जैन भूगोल खगोल यह दोनों मिक्स थे उस वक्त। अभी हम खगोल और भूगोल दोनों अलग करके पढ़ते हैं | तो इसमें जो 8 विसंगतियां हैं। इसको हम मानते हैं कि अर्थ की शेप डिस्क जैसी है| विज्ञान मानता है कि

वह स्टेटिकल है ऐसा, जैन धर्म कहता है रोटेट नहीं करता है| इतना समझ में नहीं आया क्योंकि इसका नाम भू-गोल रखा है मतलब के भूमि गोल है मतलब कि यह कॉन्ट्रोवर्सी पहले से होगी तो इसको स्पष्ट करने के लिए उसका नाम कहीं हमने भूगोल दिया है तो तो यह फ्लैट कैसे हो सकती है? फिर जंबूद्वीप कहां है ? यह अर्थ है अपनी जंबूद्वीप या गैलेक्सी है या पूरा मध्यलोक है और यह मेरु पर्वत कहां है यह भी पता नहीं है| फिर जैन दर्शन दो चंद्रमा और सूर्य की बात करता है|। हमको तो एक ही सूर्य दिखाई देता है एक ही चंद्रमा है उसी से हम भली भांति परिचित है|। फिर सन इस क्लोजर टू अर्थ मून ऐसी बात शास्त्र में लिखा हुआ है सूर्य पास में 800 योजन है और चंद्रमा 880 योजन है और सिकवांस ऑफ प्लैनेट्स भी गलत दी हुई है ||। और जो द्वीप हैं, 8 द्वीप की बात करते हैं वैसे तो अनंत द्वीप है||। उनकी साइज डबल होती है जा रही है ऐसा जैन दर्शन कहता है और कालचक्र जो है ||। जो अवसरपीनी और उत्तसर्पिणी बात करते हैं वो अरबों खरबों की मानी जाती है 10 to 40 years जाती है ज्ञान की दृष्टि से इसकी उम्र करीब 13 पॉइंट 7 बिलियन यर्स ही है और यूनिट ऑफ टाइम और डिस्टेंस में जो योजन है उसमें बहुत मुश्किल है एक्जेक्टली यह जो योजन माना जाता है उसके कितने किलोमीटर है यह पता नहीं है||। तो भिन्न-भिन्न उसके कॉन्पिटेटिव वैल्यू दिए हैं ||जनरेशन को यदि कहें की पृथ्वी चपटी है और घूमती नहीं है। वो कहते हैं कि यह तो दिखाई नहीं देता है||। तो इसको हम किस प्रकार सुधार सकते हैं||। कई लोग कहते हैं कि डिस्क शेप लिखा है तो गैलेक्सी की बात कर रहे हैं यह पृथ्वी की बात नहीं कर रहे हैं और जो गैलेक्सी है अपनी निहारिका आकाशगंगा जिसे हम कहते हैं वह फ्लेट है, तो शायद उसकी बात कर रहे हैं।| तो यह भी स्पष्ट नहीं है||।

जंबूद्वीप के आसपास सब समुद्र दिए हैं जैसे कि लवण समुद्र है यह ऐसा है ||। जो जम्बूद्वीप से नंदीश्वर तक यह कॉन्सन्ट्रिक रिंग्स में बताया गया है||। तो यह सब कहां है यह प्रश्न उठता है| शास्त्रों में से इस चित्र के द्वारा हम देखते हैं कि पृथ्वी 5 भागों में बनी हुई है और यह एक गोला का रूप में नक्षत्र और तारे और सूर्य और चंद्रमा||। दो सूर्य और दो चंद्रमा इसके चारों ओर घूम रहे हैं||। तो यह बड़ी दुविधा का सवाल है और कई लोग मेरे पर्वत की बात करते हैं कि एक लाख योजन का मेरु पर्वत है||। वह बीच-बीच में है वह

हमको कहीं दिखाई नहीं देगा हमने इतने सारे स्पेस मिशन भेजें जो सूर्य मंडल के बाहर भी चले गए ||। पायोनियर और वॉइझ मिशन थे वह सूर्य मंडल के बाहर चले गए कहीं ऐसा मेरु पर्वत नहीं दिखाई दिया |। तो इसलिए हमारा विश्वास इसमें बहुत कम होता जा रहा है|। यह हुई भूगोल और सोलर सिस्टम की बात|। और जहां तक हम कॉस्मोलॉजी या लोका आलोक की बात करें तो वहां पर भी बहुत सारी विसंगतियां हैं ||। जैन धर्म steady-state यूनिवर्स को बिलीव करता है कि जैसा यूनिवर्स आज है वैसा ही सदैव था सदा ही होता |। जबकि विज्ञान कहता है बिग बेंग थ्योरी से बना है|। 15 बिलीयन ईयर्स एगो एक विस्फोट हुआ और उससे सारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई|। अब यह यूनिवर्स एक ही है कि कई है ? और अपने तो त्रिलोक की बात करते हैं। तीन लोक हैं स्वर्ग लोक मध्यलोक मनुष्य लोग नरक लोक। तो कौन सा सही है? और इसकी शब्द कुछ अलग से बताते हैं हालांकि कुछ खगोल वह भी गोलाकार है लेकिन शेप जब बताते हैं एंगुलर अलग ही बताते हैं। स्वर्ग और नर्क तो कहीं मिले ही नहीं है। तो कैसे हम इसको इसमें समन्वय स्थापित कर सकते हैं यहां पर सात पृथ्व हैं सात में स्वर्ग लोक हैं। ऐसी जैन दर्शन की मान्यता है पर विज्ञान जो हाल ही में अभी रीसेंट उसके दो रिजल्ट आए हैं जो स्पेस मिशन भेजे थे। वह कहते हैं कि 12:00 देग का हाइट ड्रोन है| मतलब की १२ भुजाए है|। एक यूनिवर्स मतलब कि इसकी 12:00 प्लेन है जिससे यह बना हुआ है |। तो इसमें भी विषमता है तो इन सब का अध्ययन करने के लिए और दूसरा यह बिगबैंक यूनिवर्स का चित्र । एक समय था 14 बिलीयन ईयर्स एगो जहां से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई ।धीरे-धीरे बने एटम फिर मौलिक्युल फिर गैलेक्सी, बने प्रगति होती गई। हम बड़ी दुविधा में है और यह जो अपना कालचक्र है। इसकी चर्चा की जाती है कि एक अवसर पीनी है एक उत्सरपीनी है। इसकी की वैल्यू एंड टू द पावर फोर्टीन इयर्स कही जाती है। जबकि पांचवें और छठे बारे में जो एज है वह 21000 और 42000 वर्ष दी गई है ।यहां पर कुछ विसंगतियां बताइए इस पर हमारे जैन एकेडमी के कई विद्वानों ने एकेडमी ऑफ स्कॉलर्स हैं, जिसमे मैं काम करता हूं। इसका 2 वर्ष तक स्टडी किया। आचार्य नंदीघोष सूरी जी महाराज और और मुनि श्री महेंद्र कुमार जी, उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी है, जिसने फिलोसोफी, दर्शन और विज्ञान जैन धर्म तीनों का समन्वय करने का प्रयत्न किया है उन्होंने। और कई स्कॉलर है डॉक्टर भीम राज जैन

पी एस ठक्कर महेंद्र जैन राजमल जी जैन अमित जैन और कई विद्वानों ने इस पर प्रयास किया है ।

तो हमारा क्या निष्कर्ष रहा इसमें हमारे शास्त्र जो हैं वह महावीर स्वामी के समय तो लिखे गए नहीं और उसके 300 400 साल बाद में लिखे गए विलुप्त हो गए फिर पुनर्जीवित किए गए फिर लिखे गए डॉक्यूमेंट किए गए इस प्रकार फिर छठी शताब्दी में फिर संकलन हुआ विलुप्त हो गए फिर 12 वीं शताब्दी में संकलन हुआ तो हुआ । यह है एस्ट्रोनॉमी एस्ट्रो लोजी और धर्म इन तीनों को मिक्स कर दिया गया। हम केवल एस्ट्रोनॉमी या खगोल शास्त्र बात नहीं करते साथ में ज्योतिष भी डाल दिया साथ में धार्मिकता को भी डाल दिया है इसकी वजह से कई धारणाएं जो है वह मिक्स हो गई। और हम जो आधुनिक केवल एस्ट्रोनॉमी की बात करता है उससे इसका मिलन नहीं होता और कुछ कैलकुलेशन ऐसी होती है जो अगर हम मान ले यह पृथ्वी चपटी है या घूमती नहीं है तो उसके कैलकुलेशन आसान होती है तो ज्योतिष में इसका बहुत प्रयोग हुआ है। तो लोगों ने इसको मान लिया है पृथ्वी चपटी है तो हम पहले मान लेते हैं पृथ्वी घूम नहीं रही है उससे फिर एक ईक्वेशन जो होता है वह सॉल्व नहीं हो पाती है। आप अगर घूमती हुई और रोटेटिंग अर्थ ले तो ।। पर हम सब कैलकुलेशन करके बाद में उसका रोटेशनल वैलोसिटी और रिवॉल्यूशन वैल्यू सिटी डालते हैं तो यह इक्वेशन सॉल्यूशन होता है। दूसरा प्रॉब्लम यह है कि डायग्राम जो बनाया है या जो शास्त्रों में हमने हमारे विवरण हैं वह एक compact pictow ग्राम यह उनका एक स्टाइल का था और डॉक्टर जीवराज जैन ने इस पर बहुत काम किया है। तो वह उसको हम फिजिकल, दो प्रकार होते हैं एक होता है एरियल प्रोजेक्शन मेथड जो अभी अब दुनिया में दुनिया नक्शा लेते हैं या हम कोई ग्रहों का नक्शा बनाते हैं उसको एरियल प्रोजेक्शन कहते हैं वह कैसे दिखाई देता है ऐसे करते हैं। परंतु जो अपने शास्त्रों में जो जो पिक्चर है वह एक प्रकार से कुछ कोम्पेक्ट उनका तरीका अलग था । वह एक एरियल प्रोजेक्शन मेथड नहीं था । और डॉक्टर जीवराज जैन कहां है कि वह तो स्टेटीस का प्रोजेक्शन करते हैं क्योंकि लोक इतना बड़ा है कि उसको हम दिखा नहीं सकते नक्शा में। तो उसको हम हिस्टोग्राम के रूप में दिखाते हैं। तो कुछ बातें तो हमें मान कर चलनी पड़ेगी।

महावीर स्वामी के समय में लोग पता था कि भूगोल कैसा है दुनिया कैसी है कैसी बनी है कितनी कॉन्टिनेंट है महावीर स्वामी स्वयं भी पैदल चलकर पूरे भारतवर्ष में उन्होंने विचरण किया और उसके तुरंत बाद में सिकंदर या बाद में सबको यह पता है तो फिर यह गलतियां क्यों होती है। तो उनको पता था और जो एक्लिप्स है हमारे यहां सूर्य ग्रहण चंद्र ग्रहण उनका भी प्रिडिक्शन है उनको सितारों का सूर्य का चंद्र काम चंद्रमा का भी पूरा ज्ञान था मौशन का। वह भी समय और जब हम पिक्चर बनाते हैं तो टेंपल और ट्री और फीचर सब ऐसे बताते हैं यह सब सिंबॉलिक है। जैसे लिखा है कि चारों तरफ जीनालय थे, तो कई विद्वानों ने उसके चार डायरेक्शन पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण में 4 जिनालय बता दिए। तो उनका अर्थ यह नहीं था कि चारों तरफ 4 जिनालय हैं उनका मतलब कि सब जगह जिनालय हैं, उस वक्त जैन धर्म का प्रचलन था। इस प्रकार हमने काफी इसका अध्ययन किया और हम निष्कर्ष पर पहुंचे कि जो डायग्राम है वह सिंबॉलिक है और ना ओर्नामेटल है, इनको डेकोरेट करके बताने की प्रथा थी और यह पिक्चर डोपेक्षण है जो एरियल प्रोजेक्शन नहीं है। एरियल प्रोजेक्शन नहीं है । फिर वह सिमेट्री पर बहुत जोर देते थे और एस्ट्रोलॉजी जो है ज्योतिष के हिसाब से कहीं डायग्राम बने और ज्योतिष का कुछ खगोल शास्त्र से कोई सीधा लेना देना नहीं है वह अपने अलग हिसाब से चलते हैं और कसारा साहब ने तो ये भी कहां है कुछ कुछ कांटेक्ट एक्टिव नंबर जो है वह शायद लुप्त हो गए है ।

बाद में कुछ आचार्यों ने और भी दूसरे हिंदू इनफ्लुएंस ग्रीक इनफ्लुएंस इस प्रकार यह खगोल और भूगोल की अवधारणा की | जैसे वैताद्य पर्वत है पर्वत है उसका जो डायाग्राम है ऐसा कोई पर्वत नहीं है जो फ्लेट हो एक के ऊपर ए क्लियर हो लेयर हो| ऐसा हो और नीचे घर बने हुए हैं| स्ट्रेक्सटेटिक डायाग्राम है जिसको हम इस प्रकार दिखाते हैं | इसका अर्थ यह हुआ कि हम इसको लिटरली एक पर्वत नहीं ले सकते जैसे कई विद्वानों ने लिया है और इससे बहुत गलत धारणाएं फैली है |हम यह कह सकते हैं कि जैसे 50 मीटर हाइट के बहुत सारे पर्वत है 1000 से कम है मीटर के और 2000 मीटर के उससे भी कम है और 5000 मीटर के बहुत ही कम है| और इस प्रकार उन्होंने स्टेटस टिक मैप दिखाया है नीचे जो घर बताया है तो इसको लोग कहते हैं कि वहां पर गुफा बनी है| मतलब के नीचे लोग

रहते थे| तो इस प्रकार हम इंटरप्रिटेशन करें तो कई चीजें मिलती है इस क्रम में एक ज्योतिष पट्टी बताई गई है इसे कहते हैं कि सूर्य पास में है, चंद्रमा दूर है यह नक्षत्र है बुध है शुक्र है गुरु है यह सिक्वंस दी है आगे जाकर मंगल और शनि है तो उनको पता है कि यह सुनकर करेक्ट नहीं है | हमें पहले बुध ग्रह मिलेगा फिर शुक्र ग्रह मिलेगा फिर पृथ्वी है फिर गुरु है फिर शनि क्योंकि कुछ ही पेज के बाद मैं उन्होंने इसको सही ढंग से बताया है जो वास्तविक है| तो हम इसको करेक्ट सीक्वेंस नहीं ले सकते लेकिन कई आचार्य ने विद्वानों ने लिया है यह क्या है|

यह चित्र क्या है इन ग्रहों का मनुष्य पर कितना अफेक्ट पड़ता है उसको दर्शाता है यह और तो| हमको पता है कि सूर्य सबसे ज्यादा इफेक्ट होता है हम पर जो बायो ओरेमं कहते हैं| हम सूर्य के हिसाब से चलते हैं हमारा जीवन चलता है इस प्रकार सिक्वंस मिलती है | जब हम टाइडल फोर्स की बात करते हैं जो ज्वार भाटा आता है ,चंद्रमा सूर्य और दूसरे ग्रहों से खासकर जुपिटरसे जो बड़ा ग्रह है, तो यह सीक्वेंस जीवो पर विभिन्न ग्रहों का टाइटल इफेक्ट या जो आप कहेंगे ज्योतिष शास्त्र के हिसाब से ऐसा बताया गया है| इसको लिटरेरी ऐसा नहीं ले सकते क्योंकि टाइडल इफेक्ट जो है distance to be distance to the height फॉर और फाइव होता है| इसलिए सूर्य को सबसे नजदीक बताया गया है और यह सब हम गलत मानकर चलते हैं कि सूर्य नजदीक है और चंद्रमा दूर है ऐसा वास्तव में नहीं है| यह एस्ट्रोलॉजिकल इफेक्ट है जिससे गलत अवधारणाएं हमारे जैन आगम में आ गई है तिलोयपन्न्ती से ।

देखे तो गौतम स्वामी ने पूछा यह जंबूद्वीप कहां है भगवान कितना बड़ा है इसका संस्थान कैसा है उसका स्वरूप कैसा है तो भगवान ने उत्तर दिया यह जंबूद्वीप सब द्वीपों के मध्य में स्थित है| अब मध्य का कहीं लोग सेंटर मान लेते हैं वह गलत है वह बीच में है कहीं ऐसा ऐसा माने तो हम आधुनिक विज्ञान से इसका समन्वय कर सकते हैं| और छोटा है गोल है तेल के तले हुए पूए जैसा गोल है और तो लोग इसको चपटा मान लेते हैं रथ के पहिए जैसा है कमल की करणी का जैसा है और प्रति पूर्ण आकार जैसा है गोल ,गोल ऐसा उन्होंने लिखा है पर हम तो यह मानते नहीं तो मैं इस विचार में आया कि यह चार उपमा

भगवान ने क्यों दी एक ही बता देते की चपटा है काम खत्म हो गया| जब वह कह रहे हैं कि चक्र है पैया के जैसे हैं तो कहिए के जैसे कि यह घूम रहा है, इसकी एक्सेस है| तो इसका हम इंटरप्रिटेशन सही नहीं कर रहे हैं इसलिए सब विसंगतियां हुई है अगर हम इसको करेक्ट इंटरप्रिटेशन करे तो यह क्लियर है कि यह गोल जैसे तली हुई पुरी अगर ऐसा बताया तो पूरी फुली हुई है तो ऐसी ही है| पृथ्वी अपने एक्सेस की और चारों तरफ घूम रही है| यह सभी धारणाओं को हमने जैन अकैडमी स्कॉलर की प्रोसिडिंग में यह है प्रकाशित किया है छापा है लोक इश्यु में सब का विवरण है| तो उन्होंने क्यों कहा कि लोटस की तरह है यह एक्चुअली अगर हम यह नोरथ से देखे करें तो उसको सिमिट्रिक करके लोटस की तरह बताया है|

फाइनली हमारी यह अवधारणा है कि भरत चक्रवर्ती के समय में पूरे नॉर्थन हेमिस्यर में जैन धर्म का प्रचलन था| इसलिए चारों तरफ जीनालय थे, चारों तरफ लवण समुद्र थे और जो जंबूद्वीप बता रहे हैं वह नॉर्थ हेमिस्फीयर का पोलरव्यू है| लवण समुद्र है एल्कोहलिक्स सी है, दूध समुद्र है फिर इक्सु रस यानी कि शुगर का सी है| अभी हाल ही में जैसे हमारा सूर्य मंडल है और इसमें यह स्पेस है बीच में जम्मू दीप में लवण समुद्र है तो यह पृथ्वी हमारे इसमें खारा समुद्र है| यह काला समुद्र है पुष्कर द्वीप है वरुण समुद्र है क्सीर समुद्र है ऑइली है धृत समुद्र है फिर शुगर है || कुछ वर्ष पहले करीब 25 वर्ष पहले नासा ने एक या यान भेजा था केसीनीहायकंस | आज जानते हैं एस्ट्रोनोमी के हिसाब से हम जिसे जानते हैं उस से मेल खाता है| एस्ट्रोनॉमी को मिनी हाय गन मिशन जो है शनि ग्रह के चारों तरफ गया है फिर यह प्लूटो पर उतरा यह बहुत ही कॉम्प्लिकेटेड मशीन है। कितनी कॉन्प्लिकेटेड है| वहां पर लेकस मिले बड़ी-बड़ी जीले हैं जो अल्कोहल की बनी हुई है| जिसको हम कहते हैं कि यह लिकर का जो अपने शास्त्रों में वर्णन है वह वहां मिलेगा तो यह हमको मिला है| एक्चुअली हम इसका ठीक से इंटरप्रिटेशन करें तो यह प्रीडिक्त कर सकते थे कि जैसे जैसे आप बाहर द्वीपो पर जाएंगे जैसे कि प्लूटो तो आपको यह जो दारू का समुद्र कहते हैं ऐसा पानी मिलेगा |और कैल्शियम जो है वह जो पानी में मिक्स होता है तो वह दूधिया अब हो जाता है उसको हम क्षीर सागर कहते हैं| तो उसका खाली केमिकल अपीरियंस कैल्शियम है लेकिन दिखता वह दूधिया है| तो इस प्रकार हम इसको

विज्ञान से जोड़ सकते हैं| अब हुआ यह है कि सब जगह पानी मिला है| कई जगह है सल्फर मिली है कई जगह मीठा पानी मिला है, खारा पानी मिला है, ईथेन और मीथेन के के समुद्र मिले हैं और इस प्रकार कॉमेंट्स में भी और अल्कोहल होती है जो शास्त्रों में लिखा है वह गलत नहीं है पर उसके कॉन्सन्ट्रिक रिंग बनाकर उसको हम बिना कोई प्रूफ के हम उसको मान ले तो हम फिर वह एग्रीमेंट नहीं होता है डिसएग्रीमेंट हो जाता है | मंगलयान जो इसरो ने भेजा है यह चंद्रमा पर गया यहां पर भी उसको पानी मिला| यह हमारी सबसे बड़ी खोज है यान की थी चंद्रमा के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर विशेषकर दक्षिणी ध्रुव में बहुत मीठा पानी है| बर्फ के रूप में है जबकि बर्फ जमा हुआ है और जब मंगलयान मंगल ग्रह पर गया था उसने भी वहां फोटो ली तो उसे भी पता चला कि यह तो नासा की पिक्चर्स में दिखा रहा हूं| आप देख रहे हैं यह नदी और पानी के कैसे जो विरोचन होता है ऐसे फीचर्स है तो यह हो इसके बाद में हम को मीठा पानी मिला| फिर वह एल्कोहलिक पानी मिला हां सब एक्चुअली सही है|

अब एक एस्ट्रोनोमर हुए हैं बोडे करके| उन्होंने एक फार्मूला दिया फार्मूला डिस्टेंस करके और इसको हम इस तरह भी कह सकते है की चार जोडीए और तीन से गुना करे तो एक बय planetary dispenses आएगी । एक्जेक्टली जब हम तिलोईपनौती में खोज की तो वहां पर एक श्लोक मिलता है कि विविक्षित द्वीप समूह के बाहिय सूची व्यास के प्रमाण में तीन लाख जोड़कर चार का भाग देने से वालय व्यास का प्रमाण होता है। और कालुदारी समुद्री विविक्षित है इसका सूची व्यास इतनी है वगेरे सूचि दी है| एड डिवाइड बे थ्री एंडमंतिपल बाय तेन ये जो फार्मूला है वह टीटीएस बोडेलो से बिलकुल मिलता है।| मेरी तो यह धारणा हुई कि जो फार्मूला इन्होंने दिया है यह उन्होंने तिलोय पन्न्ती से ही लिया है| पर हम इसको डिस्कार्ड करके हम दूसरी बातें करते हैं कि यह सही नहीं है यह शास्त्रों में लिखा हुआ है यह गलत नहीं है। इनकी वजह से यह - मरकरी विनस मार्स जूपिटर इनकी डिस्टेंस देखिए तो बिलकुल मेल खाती है जो हमारे शास्त्रो मैं लिखा हुआ है। तिलोयपन्न्ती में जो और भी है औरबीट है जो ग्रहों का ऑर्बिट फ्लैट है सब एक ही प्लेन में घूमते हैं सारे ग्रह को हम एथलेटिक प्लेन कहते हैं और उनकी डिस्टेंस भी डबल होती जा रही है। इसकी यहां पर तुलना की गई है टेटस बोलो और एक्चुअल डिस्टेंस जो ऑप्शन

है वह सेलाइन वॉटर है स्वीट वॉटर है अल्कोहलिक होटल है और हम कह सकते हैं कि वहां शुगर आर्डर है शुगर भी होगी मतलब कि जिसको क्षीरसागर है, इक्सु रस, शुगर नहीं है मीठा पानी है हो सकता है। इस प्रकार कहीं चीजों का हम इसमें मिलान कर सकते हैं। प्लेनेटरी और भी जो है वह डिस्क टाइप है इसका टाइप है ऑर्बिट जो है वह एक प्लेन में चलता है लाइक अ चेरियट।|। महावीर स्वामी ने उत्तर दिया एक रथ के चक्र की तरह घूमता है है और तो आपको पता ही है पृथ्वी पर नार्मल वोटर मार्स पर है और ओस्तेरोइड एंड अधर प्लेनेट है वहा आर्गेनिक कम्पौंड आल्कोहोलिक और आयल वगैरा मिले है हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे की शास्त्र को हटा दें टाइटल इफेक्ट को हटा दें खगोल शास्त्र की बात करें काफी चीजें मिलती है इसमें काफी कम करने की आवश्यकता है और बहुत सी चीज है जो एक्सपेरिमेंटल जो हमारी जान गए हैं यान गए हैं तो हम यह निष्कर्ष पर कि जम्मू दीप इस अर्थ पर अपना जो पृथ्वी है वह जंबूद्वीप है और जो बोडेलो हैं यह वही है जो आगम में लिखा है ।

इस तरह हम काफी इस में समानता स्थापित कर सकते हैं इसके प्रेडिक्शन भी है क्योंकि आपने शास्त्रों में लिखा है तो बाहर जाएंगे तो वहां जीव मिलेंगे । अभी तक तो कोई मिली नहीं है पर हम इसको प्रीडिट कर सकते हैं । मंगल ग्रह पर जीवन होगा, मंगल ग्रह पर यान जा रहा था तब हमने एक मिथें न का सजेशन किया था, अगर बैक्टीरिया होंगे तो मिथेन प्रोड्यूस करेंगे तो हम को पता चलेगा कि वहां जीव है कि नहीं दिखाई तो देते नहीं है । तो हम इस प्रकार कई चीजों का समुद्र के जो केमिकल कंपोजिशन हैं इसको हम कर सकते हैं । कालचक्र का एग्जांपल देखें तो पृथ्वी जो है वह अपनी धरा पर चलती है परंतु एक उसका प्रिशेशन होता है और एक उसका टिल्ट होता है और यह हमने हमारे लेबोरेटरी में इस मिलन को हम साइकिल कहते हैं । एक रूसी वैज्ञानिक ने स्कूल टीचर ने यह प्रिडिक्ट किया था और इसका हमने अपने लेब टेस्ट किया तो यह साइकिल आ रहे हैं टेंपरेचर साइकिल । तो तीन प्रकार की साइकिल निकले हैं इसमें से एक 21000 साल का जो अपने फ पांचवी आरा से बिल्कुल मैच करता है । यह बहुत आश्चर्य की बात लगी तब कि जब कालचक्र बताते हैं तब इसमें पांचवी का वैल्यू 21000 बताया गया है और हमने जब इसका अध्ययन किया हमारे ऑक्सीजन स्टॉक में आई स्टॉक में टेंपरेचर से निकला

जा सकता है उसका स्टडी करके । तो ऐसा पता चला कि एग्जिट मैच कर रहे हैं एक साइकिल हमें और मिला 1लाख साल का वह हमारी शास्त्र में वर्णित नहीं है उसको कोडाकोड़ी करके किया है तेन टू फोर्टीन ।

समरी :

Many astronomical features can be rec councilled if

1. proper interpretation is made with open mind astrology and religious aspects are separated and set a side for the time being

कुछ समय के लिए हम ज्योतिष शास्त्र को अलग कर दे तो अपने धर्मों में जो विवरण है महाविदेह क्षेत्र कहां है सीमंधर स्वामी कहां है इसको हम एक तरफ रख दे और खाली खगोल शास्त्र की बात करें तो कई चीजें आधुनिक विज्ञान से मेल खाती है ।

*aspects have been discussed

1. Jammu deep North polar view Meru

2.dvipass solar system quantitative agreement of distances and some chemical agreement with modern missions सोलर सिस्टम के हमारे जो प्लेनेट है उसके ऑर्बिट

3.kalchakra climatic cycles 21000 42000 or vth and vth match kaalchakra is nothing but climatic circle cycle on the earth

जो हमारे जो हमारे क्लाइमेट बदलते हैं कि हम 21000 - 42000 यह बिल्कुल मैच खाते हैं ।

तो इस प्रकार से बहुत सारी विंग विसंगतियां दूर की जा सकती है यदि हम आधुनिक विज्ञान के जो नंबर है वह लेकर जबरदस्ती नहीं किंतु एक दूसरे के साथ मेल खाती है ।

****